# अथैकादशोऽध्यायः

## ग्याह्माँ बिराटरूपदर्सन अद्ध्याय

**अर्जुन उवाच**

**मदनुग्रहाय परमं, गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम्।**
**यत् त्वयोक्तं वचस्तेन, मोहोऽयं विगतो मम।। १**

अर्जन बोल्ल्या

(दिखा आपणाँ रूप ईसरी)

मेंरै ऊप्पर क्रिपा करण नै, घणा गुपत 'अद्ध्यातम' नाँ का ।
जो इब तन्नै कह्या वचन सै, उस तैँ मोह् यो मिट ग्या मेरा।। १

**भवाप्ययौ हि भूतानां, श्रुतौ विस्तरशो मया।**
**त्वत्तः कमलपत्राक्ष, माहात्म्यमपि चाव्ययम्।। २**

जलम मरण क्यूँकी भूत्ताँ के, सुणे सैँ विस्तार तैँ मन्नै।
तेंरै तैँ कँवलनैण किरसण, ओर महात्तम बी अविनासी।। २

**एवमेतद् यथाऽऽत्थ त्वमात्मानं परमेश्वर।**
**द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम।। ३**

न्यूँ यो ज्यूँ बोल्ल्या सै तन्नै, आप्पा आप्णा हे परमेसर।
देक्ख्या चाहूँ सूँ मैँ तेरा, रूप ईसरी हे परसोत्तम।। ३

**मन्यसे यदि तच्छक्यं, मया द्रष्टुमिति प्रभो।**
**योगेश्वर ततो मे त्वं, दर्शयात्मानमव्ययम्।। ४**

समझै तैँ जो देख सकूँ मैँ, वो हे परभू, हे योगेसर।
तो मन्नै तैँ ईब दिखा दे, आप्पा तेरा अविनासी।। ४

**श्रीभगवानुवाच**

**पश्य मे पार्थ रूपाणि, शतशोऽथ सहस्रशः।**
**नानाविधानि दिव्यानि, नानावर्णाकृतीनि च।। ५**

स्रीभगुवान् बोल्ले



(अर्जन, मेरे रूप देख तैँ)

देख तैँ मेरे रूप अर्जन, सै-सै सैँ ओर हज़ाराँ जो।
तह्याँ-तह्याँ के दिव्य भोत से, रङ्गाँ आळे, सिकल्याँ आळे।। ५

**पश्यादित्यान् वसून् रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा।**
**बहून्यदृष्टपूर्वाणि, पश्याश्चर्याणि भारत।। ६**

देख सूरजाँ नै, वसुआँ नै, रुदराँ, दो अस्विन्, मरुताँ नै।
भोत, नहीँ जो देक्खे पहल्याँ, देख अजूबे वैँ तैँ अर्जन।। ६

**इहैकस्थं जगत् कृत्स्नं, पश्याद्य सचराचरम्।**
**मम देहे गुडाकेश, यच्चान्यद् द्रष्टुमिच्छसि।। ७**

इत एक जघाँ स्थित जग पूरा, देख आज सँग जङ्गम स्थावर।
मेरी काया मैँ रै अर्जन, जो ओर किमे देक्ख्या चाह्वै।। ७

**न तु मां शक्यसे, द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुसा।**
**दिव्यं ददामि ते चक्षुः, पश्य मे योगमैश्वरम्।। ८**

(दिब्ब्य द्रिस्टि देऊँ तन्नै)

नाँ, पर, मन्नै सकै देख तैँ, इस्सै आप्णी द्रिस्टी तैँ सै।
प्राक्रित जग मैँ जो नाँ मिलदी, मैँ देऊँ तन्नै वा द्रिस्टी।
'दिव्य' अजूबे देक्खण आळी, देख जुगाड़ा मुझ ईस्सर का।। ८

**संजय उवाच**

**एवमुक्त्वा ततो राजन्, महायोगेश्वरो हरिः।**
**दर्शयामास पार्थाय, परमं रूपमैश्वरम्।। ९**

सञ्जै बोल्ल्या

(दिव्य रूप का मोट्टा वर्णन)

न्यूँ कह पाच्छै हे राज्जा जी, बड्डै योगेसर किरसण नै।
दरसाया पिरथा कै सुत तैँ, सब तैँ आच्छा रूप ईसरी।। ९

**अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।**
**अनेकदिव्याभरणं, दिव्यानेकोद्यतायुधम्।। १०**

घणै मुँहाँ अर आँख्याँ आळा, भोत अजूबे जिस मैँ दीक्खैँ।
भोत विचित्तर गहण्याँ आळा, अद्भुत भोत उठाए अस्तर।। १०

**दिव्यमाल्याम्बरधरं, दिव्यगन्धानुलेपनम्।**
**सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम्।। ११**

अद्भुत माळा बस्तर पहरे, दिव्य सुगन्धित लेप लगाए।
सारे अचरज धारण करदा, नाँ ओड़ मिलै जिस का कित्तै।
सबै दिसा मैँ मूढ्याँ आळा, देव दिखाया किरसण नै तद।। ११

**दिवि सूर्यसहस्त्रस्य, भवेद् युगपदुत्थिता।**
**यदि भाः सदृशी सा स्याद्, भासस्तस्य महात्मनः।। १२**

आसमाँ मैँ हजाराँ सूरज, हौँ कट्ठे अर चौँध सभी की।
जै चौँध बरोब्बर वा होवै, उस महादेव कै चिमकण की।। १२

**तत्रैकस्थं जगत् कृत्स्नं, प्रविभक्तमनेकधा।**
**अपश्यद्देवदेवस्य, शरीरे पाण्डवस्तदा।। १३**

(साब्बत दुनियाँ उत देक्खी)

उत एक जघाँ स्थित जग पूरा, बँड्या खड़्या जो कई तह्याँ तैँ।
देक्ख्या देवत्याँ कै देव कै, तन मैँ पाण्डू कै सुत नै तद।। १३

**ततः स विस्मयाविष्टो, हृष्टरोमा धनंजय।**
**प्रणम्य शिरसा देवं, कृताञ्जलिरभाषत।। १४**

(अचरज मैँ भर अर्जन बोल्ल्या)

उस पाच्छै वो अचरज मैँ पड़, खड़े रूँगट्याँ आळा हो कैँ।
नवा सीस अर हाथ जोड़ कैँ, देव तईँ न्यूँ अर्जन बोल्ल्या।। १४

**अर्जुन उवाच**

**पश्यामि देवांस्तव देव देहे, सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्।**
**ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्।। १५**

अर्जन बोल्ल्या
(मन्नै देक्ख्या रूप अजूब्बा)



देक्खूँ इब सूँ सब देवाँ नै, तेरी, हे देव, देह मैँ मैँ।
खास तह्याँ के स्थावर जङ्गम, जेर-लपेट्टे, स्त्रीयोनी तैँ।।
अण्डै तैँ अर बीज फोड़ कैँ, पैदा होणाळे भूत्ताँ के।
बड़े-बड़े जो झुण्ड घणै सैँ, उन नै देक्खूँ सार्याँ नै मैँ।।
बिस्णू कै नाभिकमल मैँ स्थित, ब्रह्मा नै, सङ्कर नै, सारे।
रिसियाँ नै, अद्भुत साँप्पाँ नै।। १५

**अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं, पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।**
**नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं, पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप।। १६**

भोत भुजा, मुँह पेट'र आँक्ख्याँ, आळै नै अर सभी ओड़ तैँ।
बेअन्त रूप बणावण आळै, देक्खूँ तन्नै भगवन्, मैँ सूँ।।
ओड़, नाँ ए बीच तेरा, सरुआत कितै नाँ देक्खूँ सूँ।
जग के स्वामी जगरूप हरे।। १६

**किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च, तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्।**
**पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद् दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम्।।१७**

मुकुट गदा अर चक्र धारदा, ढेर तेज का सबै तरफ तैँ।
झळ मारै अर देक्ख्या नाँ जा, च्यारूँ कान्हीँ बळदी अग्गी।।
सूरज की झळ आळै जिस नै, माप सकै नाँ कोए, न्यूँ ए।
तन्नै देक्खूँ किरसण, मैँ सूँ।। १७

**त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं, त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।**
**त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता, सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे।।१८**

तैँ अविनासी, सब तैँ ऊँच्चा, जाणन जोग्गा ततव परम तैँ।
तैँ इस जग का परम ठिकाणा, तैँ अविकारी सै अर तैँ सै।।
धर्म सनातन का रखवाळा, सदा रहै जो, पुरुस इसा तैँ।
मन्नै मान्न्या सै परसोतम।। १८

**अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।**
**पश्यामि त्वा दीप्तहुताशवक्त्रं, स्वतेजरसा विश्वमिदं तपन्तम्।।**

देस, समै तैँ सरुआत, बीच, ओड़ नास बी जिस के नाँ होँ।
बे-ओड़ पराक्रम जिस का सै, गिणी न जावैँ बाजू आळा।
चन्दा सूरज आँक्ख्याँ आळा, बलदी अग्नी-से मुँह आळा।
निज तेज तैँ जग यो तपान्दा, देक्खूँ तन्नै किरसण मैँ सूँ।। १९

**द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि, व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।**
**दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं, लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्।। २०**

नभ धरती का यो बीच्चा, व्याप राक्ख्या एक तन्नै सै।
ओर दिसा सारी, अजीब-सा, देक्खैँ अचरज पैदा करदा।।
आकार भयंकर तेरा यो, लोक तीन सैँ डर तैँ व्याकुल।
महापुरुस हे महा आतमा।। २०

**अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति, केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति।**
**स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः, स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः।। २१**

ये तेरै मैँ देवाँ के गण, बड़ैँ समावैँ कोए डरदे।
हाथ जोड़ कैँ सैँ ये तेरी, स्तुति करदे, 'कल्याण जगत् का'।।
'बण्या रहे जग आच्छी तह्रियाँ', न्यूँ कह कैँ रिसि मुनि सिद्धाँ के गण।
करैँ प्रसँसा तेरी भोत्ती, स्तुतियाँ करदे सारे किरसण।। २१

**रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या, विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च।**
**गन्धर्वयक्षासुरसिद्धासङ्घा, वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे।। २२**

ग्यारा रुद्र, अदितिसुत बारा, आठ वसू अर साध्याँ के गण।
विस्वे देव तथा दो अस्विन्, सात-सात के सात मरुद्गण।।
गरम-गरम हो भोजन जिब तक, भाँफ उठै जो, उस नै पीन्दे।
स्राद्ध करम मैँ पित्तर तिरपत, भाँफ छोडदा भोजन खा कैँ।।
गीत, नाँच, घूँघर, बाज्ज्याँ, अर मीट्ठी वाणी तैँ मन मोहैँ।
गन्धर्व इसे, यक्ष सुपूजित, सिद्ध, असुर सब अर्ध देवगण।
देक्खैँ तन्नै चकित, ठगे-से, मूँढे बाए अचरज मैँ भर।। २२



**रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं, महाबाहो बहुबाहूरुपादम्।।**
**बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं, दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम्।। २३**

रूप बड़ा तेरा भोत मुँहाँ, आँक्ख्याँ आळा बडी भुजा आळे।
भोत भुजा जाङ्घाँ पाँ आळा, सै अर भोत पेट सैँ इस मैँ।
बिकराळ घणी जाड़ाँ तैँ यो, देख लोक सैँ व्याकुल अर मैँ।। २३

**नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं, व्यात्ताननं दीप्तविशलनेत्रम्।**
**दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा, धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो।। २४**

आकास छूणियैँ अर बळदै, तहाँ-तहाँ के रङ्ग बदळदै।
मुँह पाड़्यै बळदी-सी मोट्टी, आँक्ख्याँ आळै लख कैँ तन्नै।
डर कै मारै सहम्या-सा मैँ, धीरज नाँ पान्दा स्यान्ती बी।। २४

**दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि, दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि।**
**दिशो न जाने न लभे च शर्म, प्रसीद देवेश जगन्निवास।। २५**

जाड़ाँ तैँ बिकराळ दीखदे, तेरे मूँढे देख घणे से।
प्रळै समै की अग्नी-से ये, दिसा समझ मैँ नाँ सैँ आन्दी।
हक्का-बक्का, भौँचक मैँ सूँ, नाँ ए पान्दा सुख चैन तथा।
राज्जी हो ज्या देवपती हे, सारे जग का बास्सा रै तैँ।। २५

**अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः, सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः।**
**भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ, सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः।। २६**

ये अर तन्नै ध्रितरास्टर के, बेट्टे सारे सँग राज्ज्याँ कै।
भीसम द्रोण'र गडुवाळै का, बेट्टा वो, सँग म्हारे बी सैँ।
जोध्याँ मैँ मुखिये जो उन कै।। २६

**वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति, दंष्ट्राकरालानि भयानकानि।**
**केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः।। २७**

जाड़ाँ तैँ बिकराळ डराँदे, मूँढ्याँ मैँ तेरै तावळ तैँ।
बड़दे सारे, कोए फँसदे, दाँत-बिचाळै दीक्खैँ सैँ ये।
टुकड़े-टुकड़े बणे सिराँ तैँ।। २७

**यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः, समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति।**
**तथा तवामी नरलोकवीरा, विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति।। २८**

ज्यूँ नदियाँ कै पाणी के सैँ, रेल्ले भोत जोर तैँ बहँदे।
साग्गर कान्हीँ भाज्जै जान्दे, न्यूँ तेरे ये वीर पुरुस सैँ।
बड़दे बळदे, क्रिस्ण, मुँहाँ मैँ।। २८

**यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा, विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः।**
**तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः।। २९**

ज्यूँ बळदी आग मैँ पतङ्गे, बड़ैँ मरण नै बड़ै बेग तैँ।
न्यूँ ए नस्ट होण नै बड़दे, लोक तेरै बी ये लोग मुखाँ मैँ।
बड़ी जोर तैँ खिँचदे आन्दे, बढ्योड़ै बेग आळे सारे।। २९

**लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः।**
**तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं, भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो।। ३०**

चाट रह्या तैँ होठ भोत सै, गास बणाँदा च्यारूँ कान्हीँ।
साब्बत लोक्काँ नै तैँ जळदे, बळदे आप्णै मूँढ्याँ तैँ सै।।
तेज्जाँ तैँ भर दुनियाँ सारी, झळ ये तेरी उग्र भयानक।
खूब जळावैँ सैँ हे बिस्णू।। ३०
(अर्जन पूच्छै आप कोण सो?)

**आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो, नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद।**
**विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं, न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्।। ३१**

कह तैँ मन्नै कोण आप सो?, घोर भयङ्कर रूप्पाँ आळे?
देवाँ मैँ सब तैँ आच्छे, प्रणाम तन्नै, इब खुस हो ज्या।।
जाणना चाहूँ आप नै मैँ, आदी कारण स्रिस्टी कै नै।
नाँ मैँ जाणूँ तेरी हरकत।। ३१

**श्रीभगवानुवाच**

**कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो, लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।**
**ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे,येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।। ३२**



स्रीभगुवान् बोल्ले

(काळ बली सूँ सब नै गसदा)

काळ भोत सूँ बड्ढे होड़ा, लोक्काँ का मैँ नाँस करणियाँ।
दुनियाँ नै समेट्टण नै अड़ै, हरकत मैँ सूँ मैँ न्यूँ लाग्या।।
बिन बी तेरै नहीँ रहैँगे, सारे जो सैँ खड़े स्याम्हनै।
आप्पस मैँ इन लड़नै आळी, फोज्जाँ मैँ सैँ जो जोधे।। ३२

**तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व, जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।**
**मयैवैते निहताः पूर्वमेव, निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।। ३३**

(तैँ तो सिरफ निमित ए बण ज्या)

इस कारण तैँ उठ, जस ले ले, जीत कैँ तैँ दुस्मनाँ नै यो।
भोग राज तैँ ठाठ मारदा, हर तह्रियाँ खुसहाल भोत जो।।
मन्नै ए ये मार दिये सैँ, पहल्याँ ए, तैँ तो इन की।
भान्ना मात्तर बण म्रित्यु का, खब्बै तैँ बी काम लेणिये।। ३३

**द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च, कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।**
**मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा, युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।। ३४**

द्रोण'र भीसम, करण, जयद्रथ, सैँ ओर बी जो वीर जोधे।
मन्नै मारे इन नैँ तैँ इब, मार, मत न्याँ दुख तैँ बिचळै।
लड़ ज्या अर्जन, जीत्तैगा तैँ, जुध मैँ आप्णै दुस्मनाँ नै रै।। ३४

**संजय उवाच**

**एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य, कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी।**
**नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं, सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य।। ३५**

सञ्जै बोल्ल्या

(अर्जन नै उसकी करी बन्दगी)

या सुण बात किसन की अर्जन, हाथ जोड़, अर माथै ला कैँ।
धूज रह्या डर तैँ अर भौँचक, भर्यै गळै तैँ, डर्या-डर्या-सा।

कर नमस्कार फेर-फेर वो, झुक कैँ बोल्ल्या किरसण नै न्यूँ।। ३५

**अर्जुन उवाच**

**स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या, जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।**
**रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।। ३६**

अर्जन बोल्ल्या

बिसयाँ का अनुभव, कर्म करा, खुस जो करदी इन्द्रिय उन के।
स्वामी किरसण, तेरे गुण गा, जग खुस हो सै अर प्रेम करै।
राक्कस डरदे चहुँ दिसि भाज्जैँ, सारे अर करदे प्रणाम सैँ।
सिद्ध जनाँ के गण ये तन्नै।। ३६

**कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्, गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।**
**अनन्त देवेश जगन्निवास, त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्।। ३७**

क्यूँ अर ओर बडच्याँ तैँ बड्डै, ब्रह्मा के बी पहलै कर्ता।
तेरै आग्गै नहीँ झुकैँ क्यूँ? 'महत्' परम हे सब के आत्मा।।
अन्तरहित, देवाँ के स्वामी, दुनियाँ नै हे बास कराणे।
तैँ अविकारी, नित्य रहणियाँ, नाँ रहणाळा तैँ, अर उन तैँ।।
ऊप्पर जो सै, वो सै तैँ ए, कारण सत् अर कारज नाँ सत्।
दोन्नूँ सै तैँ किरसण निस्चै।। ३७

**त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।**
**वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम, त्वया ततं विश्वमनन्तरूप।। ३८**

तैँ देवाँ का मूळ देव सै, पुरुस पुराणा सै रै किरसण।
तैँ इस जग का परम ठिकाणा, जिस मैँ जा कैँ लीन सबै हौँ।।
जाणनियाँ तैँ, ग्यानविसै तैँ, परमतेज अर परम स्थान तैँ।
तन्नै फैलाई या दुनियाँ, हे अन्तरहित रूप्पाँ आळे।। ३८

**वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः, प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।**
**नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः, पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।। ३९**

हवा, आग, यम, वरुण, चन्द्रमा, परजापत तैँ, दाद्याँ का बी।



पिता परम तैँ, बड़का दाद्दा, फिर-फिर हो नमस्कार तन्नै।
बार हजाराँ फिर-फिर फिर तैँ, नमस्कार नमस्कार तन्नै।। ३९

**नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते, नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।**
**अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं, सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः।। ४०**

नमन करूँ सूँ स्याम्हीँ तैँ अर, पाच्छै तैँ, तन्नै मैँ भगवन्।
प्रणाम तन्नै सब कान्हीँ तैँ, सब कुछ हे, तैँ अनन्त ताकत।।
बेमाप पराक्रम आळा तैँ, सब कुछ व्याप्पै इस कारण सै।
सब रूप्पाँ मैँ सै सब कुछ तैँ ए।। ४०

**सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं, हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।**
**अजानता महिमानं तवेदं, मया प्रमादात्प्रणयेन वापि।। ४१**

'सुख-दुख मिल बाँड बतावणियाँ, सखा मित्र सै', मान, जबरियन।
जो बोल्ल्या, 'हे किरसण यादव, मित्र, सखा', न्यूँ नहीँ जाणदै।
महिमा तेरी, यो सै मन्नै, नाँसमझी, प्रेम भाव तैँ या।। ४१

**यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि, विहारशय्यासनभोजनेषु।**
**एकोऽथवाऽप्यच्युत तत्समक्षं, तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्।। ४२**

अर जो हाँस्सी मैँ बी मन्नै, अपमान कर्‌या तेरा कद्दे।
सैर-सपाट्टै, सोणै-खाणै, बैट्ठक मिल बैठ जमाणै मैँ।।
एक अकेल्लै या फिर अच्युत, नहीँ डिगणिये निज सुभाव तैँ।
या वो होया सब कै स्याम्हीँ, उस की माँग्गूँ माफ्फी सूँ मैँ।
परमाणाँ तैँ नाँ नाप्पी जा, महिमा आळै तन्नै किरसण।। ४२

**पिताऽसि लोकस्य चराचरस्य, त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।**
**न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो, लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव।। ४३**

बीज गेर कैँ जलम देणियाँ, पालन पोसण बी तैँ करदा।
जग जो जङ्गम स्थावर सै ये, तैँ सै इस का पूज्जण जोग्गा।
गरु तैँ बी तैँ बडा गरू सै, नाँ तैँ-सा सै, जादा कित तैँ।
कोए होवै तीन लोक मैँ, नाँ सै उपमा जिस की कोए।

परभाव इसा हे राक्खणिये।। ४३

**तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं, प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।**
**पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः, प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्।। ४४**

इस कारण मैं सीस झुका कैं, कर दण्डोती राज्जी करदा।
खुस होणै नै तनै मनाऊँ, स्तुति कै जोग्गै ईस्सर नै।।
बाब्बू बेट्टै का ज्यूँ करदा, मित्तर का ज्यूँ अर प्यारा।
आप्णी प्यारी का अर प्रीतम, आप्णी प्यारी कै ज्यूँ करदा।।
माफ घणी सै गलती सारी, ओर सहै सैं उन नै, न्यूँ सै।
गलती मेरी सहणा बाजिब।। ४४

**अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा, भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।**
**तदेव मे दर्शय देव रूपं, प्रसीद देवेश जगन्निवास।। ४५**

(वो ए मन्नै रूप दिखा तैं)

नाँ जो देक्ख्या पहल्याँ उस नै, देख खुसी सै मन्नै अर सै।
डर तैं ब्याकुल मन यो मेरा, वो ए मन्नै दिखा रूप तैं।
देवाँ के हे ईस, देवता, खुस हो ज्या हे दुनियाँ भर सै।
रहँदी जिस मैं, वो परमेसर।। ४५

**किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।**
**तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन, सहस्त्रबाहो भव विश्वमूर्ते।। ४६**

मुकुट गदा नै धारण करदा, अर चक्र सुदर्शन हाथ लिये।
चाहूँ तन्नै देक्ख्या मैं सूँ, उसै ढाळ का, पहल्याँ जो था।
उस्सै च्यार भुजावाँ आळै, रूप तैं तैं इब युक्त हो ज्या।
सहस भुजाँ आळे, अर यो जग, जिस की मूरत सै परमेसर।। ४६

**श्रीभगवानुवाच**

**मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं, रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।**
**तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम्।। ४७**

स्रीभगुवान् बोल्ले



(खुस हो मन्नै रूप दिखाया)

मन्नै राज्जी हो कैं तन्नै, यो रूप परम दिखलाया सै।
आप्णी माया तैं, तेजस्वी, सब अन्तरहित मूळ जगत् का।
जो मेरा तेरै तैं दूज्जै, नहीं किसै नै देक्ख्या पहल्याँ।। ४७

**न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्, न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः।**
**एवंरूपः शक्य अहं नृलोके, द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर।। ४८**

(पुण्ण्याँ तैं बी दीक्खै नाँ यो)

नाँ वेद यग्ग्य तैं, पढणै तैं, नाँ भोत तह्हाँ के दान्नाँ तैं।
नाँ भोत तह्हाँ के कर्माँ तैं, नाँ घोर तपस्या बी कर कैं।।
इसै रूप कै मन्नै कोए, माणसाँ कै इस लोक मैं सै।
देख सकै तेरै तै भिन नर, कुरुआँ मैं हे स्रेष्ठ बहादर।। ४८

**मा ते व्यथा मा च विमूढभावो, दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ् ममेदम्।**
**व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं, तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य।। ४९**

(वो ए मेरा रूप देख तैं)

नाँ तैं डर अर व्याकुल नाँ हो, नाँ ए मोह भरम बी होवै।
मेरा यो तैं इसा भयानक, रूप देख कैं नाँ घबरावै।
निर्भै, खुसदिल हो कैं तैं फिर, वो ए मेरा रूप देख यो।। ४९

**संजय उवाच**

**इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा, स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः।**
**आश्वासयामास च भीतमेनं, भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा।।५०**

सज्जै बोल्ल्या

(किरसण नै फिर वो रूप दिखाया)

अर्जुन तैं वसुदेवपुत्र नै, न्यूँ कह निज रूप दिखाया फिर।
थ्यावस बाँध्या डरदै इस नै, हो कैं फिर तैं सान्त देह का।
करुणा करणाँ पूज्य आतमा।। ५०

**अर्जुन उवाच**

**दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं, तव सौम्यं जनार्दन।**
**इदानीमस्मि संवृत्तः, सचेताः प्रकृतिं गतः।। ५१**

अर्जन बोल्ल्या

(माणस तन मैं देख तन्नै, आप्पै मैं सूँ मैं आया)
देख यो माणस का सान्त सरळ, रूप तेरा हे जन जन की।
माँग पूरी करणै आळे, दुस्ट जनाँ नै पीड़ित करदे।
ईब मैं सूँ हो ग्या चेतन, आप्णै सुभाव मैं अर आ ग्या।। ५१

**श्रीभगवानुवाच**

**सुदुर्दर्शमिदं रूपं, दृष्टवानसि यन्मम।**
**देवा अप्यस्य रूपस्य, नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः।। ५२**

स्रीभगुवान् बोल्ले

(रूप इसा यो भक्ती तैं दीक्खै)
भोत्तै मुस्कल जिसै देखणा, रूप इसा जो देख्या मेरा।
देवते बी इस रूप नै सैं, अर्जन, सदा देखणा चाह्वैं।। ५२

**नाहं वेदैर्न तपसा, न दानेन न चेज्यया।**
**शक्य एवंविधो द्रष्टुं, दृष्टवानसि मां यथा।। ५३**

नाँ मैं बेद्दाँ तैं नाँ तप तैं, नाँ दान्नाँ तैं, नाँ यग्ग्याँ तैं।
देक्ख्या जाऊँ इस तह्वियाँ का, देक्ख्या तन्नै मैं जिस तह्वियाँ।। ५३

**भक्त्या त्वनन्यया शक्य, अहमेवंविधोऽर्जुन।**
**ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन, प्रवेष्टुं च परंतप।। ५४**

ओर किसै की नाँ होणाळी, भक्ती तैं मैं इस तह्वियाँ का।
जाण्या देक्ख्या जा सकदा, असलीयत मैं प्रवेस बी सै।
मुझ मैं पा सकदा मैं बण कैं, दुस्मन नै हे दुक्खी करणे ।। ५४



**मत्कर्मकृन् मत्परमो, मद्भक्तः सङ्गवर्जितः।**
**निर्वैरः सर्वभूतेषु, यः स मामेति पाण्डव।। ५५**

**ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽयायः।।११।।**

मेरी खात्तर करम करणियाँ, मन्नै परम लक्स्य जो समझै।
मेरा भगत सहारै मेरै, ओर फँस्या नाँ कित्तै होवै।
बैर-बिरोध कदे नाँ करदा, सारे भूत्ताँ मैं कित्तै जो।
वो मन्नै पावै पाण्डूसुत।। ५५

**स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्य मैं ग्याह्रमाँ अध्याय पूरा होया।। ११।।**

पूर्वसलोकयोग ४१४ + ५५ = ४६९